॥ श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा॥

नमो नमो विन्ध्येश्वरी,
नमो नमो जगदम्ब ।
सन्त जनों के काज हित,
करतीं नहीं विलम्ब ॥ (1)

जय जय जय विन्ध्याचल रानी ।
आदिशक्ति जग विदित भवानी ॥ (2)

सिंहवाहिनी जय जग माता ।
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता ॥ (3)

कष्ट निवारिनि जय जग देवी ।
जय जय जय असुरासुर सेवी ॥ (4)

महिमा अमित अपार तुम्हारी ।
शेष सहस-मुख बरनत हारी ॥ (5)

दीनन के दुःख हरत भवानी ।
नहिं देख्यो तुमसम कौउ दानी ॥ (6)

www.ishtadev.com

सबकर मनसा पुरवत माता ।
महिमा अमित जगत विख्याता ॥ (7)

जो जन ध्यान तुम्हारी लावै ।
सो तुरतहिं वांछित फल पावै ॥ (8)

तुम्हीं वैष्णवी औ' रुद्रानी ।
तुमही शारद औ' ब्रह्मानी ॥ (9)

रमा राधिका श्यामा काली ।
मातु सदा सन्तन प्रतिपाली ॥ (10)

उमा माधवी चण्डी ज्वाला ।
बेगि मोहि पर होहु दयाला ॥ (11)

तुमही हिंगलाज महरानी ।
तुम्हीं शीतला अरु बिज्ञानी ॥ (12)

तुमहीं लक्ष्मी जग सुखदाता ।
दुर्गा दुर्ग बिनाशिनि माता ॥ (13)

तुम जाह्नवी और उन्नानी ।
हेमावति अम्बे निर्बानी ॥ (14)

अष्टभुजी वाराहिनि देवी ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव सेवी ॥ (15)

www.ishtadev.com

चौंसट्ठी देवी कल्यानी ।
गौरि मंगला सब गुन खानी ॥ (16)

पाटन मुम्बा दन्त कुमारी ।
भद्रकालि सुन विनय हमारी ॥ (17)

बज्रधारिणी शोक-नाशिनी ।
आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी ॥ (18)

जया और विजया बैताली ।
मातु संकटी अरु बिकराली ॥ (19)

नाम अनन्त तुम्हार भवानी ।
बरनौं किमि मैं जन अज्ञानी ॥ (20)

जा पर कृपा मातु तव होई ।
तो वह करै चहै मन जोई ॥ (21)

कृपा करहु मो पर महरानी ।
सिद्ध करिअ अम्बे मम बानी ॥ (22)

जो नर धरे मातु कर ध्याना ।
ताकर सदा होय कल्याना ॥ (23)

विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै ।

www.ishtadev.com

जो देवी को जाप करावै ॥ (24)

जो नर पर ऋण होय अपारा ।
सो नर पाठ करै सतबारा ॥ (25)

निश्चय ऋणमोचन होइ जाई ।
जो नर पाठ करै मन लाई ॥ (26)

अस्तुति जो नर पढ़े-पढ़ावै ।
या जग में सो बहु सुख पावै ॥ (27)

जाको व्याधि सतावै भाई ।
जाप करत सब दूरि पराई ॥ (28)

जो नर बन्दी-गृह महँ होई ।
बार हजार पाठ कर सोई ॥ (29)

निश्चय बन्धन ते छुटि जाई ।
सत्य वचन मम मानहु भाई ॥ (30)

जा पर जो कछु संकट होई ।
सादर देविहिं सुमिरै सोई ॥ (31)

पुत्र प्राप्ति इच्छा कर जोई ।
विधिवत देविहिं सुमिरै सोई ॥ (32)

www.ishtadev.com

पाँच वर्ष नित पाठ करावै ।
नौरातर महँ विप्र जिमावै ॥ (33)

निश्चय होंय प्रसन्न भवानी ।
पुत्र देहिं ताकहँ गुन खानी ॥ (34)

ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै ।
विधि समेत पूजन करवावै ॥ (35)

नित प्रति पाठ करै मन लाई ।
प्रेम सहित नहिं आन उपाई ॥ (36)

यह श्री विन्ध्याचल चालीसा ।
रंक पढ़त होवे अवनीसा ॥ (37)

यह जनि अचरज मानहु भाई ।
मातु कृपा संभव होई जाई ॥ (38)

जय जय जय जगमातु भवानी ।
कृपा करहु मो पर जन जानी ॥ (39)

॥ इति श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त ॥

www.ishtadev.com